SUSHEEL CHAWLA

57/14 Friends Colony, opp. DAV College, JALANDHAR

Phone: +91-9988374374, +91-9463365331

Ghazal Singer

Experience: 20 yrs

EDUCATION:

June 1988 – June 1989	Junior diploma from 'Paryag Sangeet Samiti'

EXPERIENCE:

Sep 2000 – Dec 2008	Hotel Lilly Resort, Jalandhar (5 star ambience) Role: Daily night ghazal performance
Jun 2000 – Sep 2000	Hotel Bollywood, Hong kong Role: Daily ghazal night performance
Nov 1998 – Jun 2000	Hotel Lilly Resort, Jalandhar (5 star ambience) Role: Daily night ghazal performance
Jan 1999	Punjab Cricket Association Stadium, Mohali Role: Ghazal performance
Feb 1997 – Nov 1998	Clock Tower Hotel, Jalandhar Role: Daily night ghazal performance
Feb 1996 – Feb 1997	Hotel President, Jalandhar Role: Occasional night ghazal performance
Jan 1996 – Dec 2000	Hotel Dastoor, Chandigarh Role: Occasional night ghazal performance
Jan 1994 – Dec 1996	Hotel James Plaza, Chandigarh Role: Daily night ghazal performance
Jan 1994 – Nov 1995	Hotel Ranvir Prime, Jalandhar Role: Occasional night ghazal performance
Jan 1993 – Dec 1993	Hotel Kooner, Gorayan Role: Daily night ghazal performance

ACHIEVEMENTS:

Jul 2004	Honored as a judge in Amble Entertainment Scholarship Programme, Gurgaon
Sep 2003	Listed artist in Doordarshan and radio (102.7)
Jul 2001	Honored by Gandhi Manav Kalyansamiti, Jind
Jul 2000	Performance at Kai-fong Cultural Centre, Hong Kong
Mar 2000	Performed in Lishkara (punjabi pop based prgramme- single artist performace) Doordarshan, Jalandhar
Jun 1999	Honored by Lions Club, status card club, Sangeet Kala Munch, Jalandhar
Mar 1990	Honored by Sahitya Sabha Kaithal, Kaithal
Jan 1990	Honored by Ras Raj Kendar, Hisar
Mar 2004	Cassettes released – Dooriyan and Besabab (Sweet India Music & Melody (I) pvt. Ltd. By Anup Jalota) Awarded College Color In College

Attachments:

Please find attached the following newspaper clippings authenticating my performances:

1) Status card programme : 1st July 1998
2) Geet & Ghazal Sandhya in Uchana Mandi (Jind), Haryana: 9th Oct 1998
3) Sham-e-ghazal in Kaithal: 27 Dec 1998
4) Sham-e-ghazal in Kaithal by Lions Club: 5th Nov 1999
5) Status Card programme in Jalandhar: 1st Oct 1999
6) Biography 2011

मौजूद अमर आहूजा, पवन मल्होत्रा, तरविंदर प्रभाकर, एस.एस. रंधावा। दूसरे दिन के समारोह में उपस्थित सहायक उपमहापौर गुरचरण सिंह नरूला, अमर आहूजा तथा संतोष आदि। कड़ी सर्दी में कार्यक्रम का आनंद लेते दर्शक। (छाया : रविंद्र, नवीन)

'स्टेट्स कार्ड' द्वारा जालंधर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम 'एक शाम गजलों के साये में' के अवसर पर (बाएं) प्रसिद्ध गजल गायक सुशील चावला अपना कलाम प्रस्तुत करते हुए। (मध्य) वैल ड्रैस्ड पर्सनेलिटी प्रतियोगिता के विजेता अनिल सहगल को विजयोपहार देते संस्था के प्रबंध निदेशक संजय साहनी तथा जी.एस. सिमरन। (दाएं) सर्वश्रेष्ठ दम्पति श्रीमती एवं श्री गुरिंदर सिंह जग्गू को सम्मानित करते हुए मुख्यातिथि डा. किरदर सेखाल। (छाया : देवेंद्र लूथर)

आयोजन में व्यस्त रहे।

शाम-ए-गजल कार्यक्रम आयोजित

कैथल, 28 दिसंबर (संस) : स्थानीय लायंस क्लब द्वारा रविवार की शाम-ए-गजल कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर जाने माने साहित्यकार प्रो. अमृत लाल मदान ने सभा को संबोधित किया।

इस कार्यक्रम में हिसार के प्रसिद्ध गजल गायक सुशील चावला, गजलकार रणधीर सिंह तथा युवा गजल गायिका कविता मदान ने भी भाग लिया।

गीत व गजल संध्या कल

उचाना मंडी, 7 अक्तूबर (मित्तल) : गांधी मानव कल्याण समिति के सौजन्य से उचाना में गांधी जयंती पर कौमी एकता सप्ताह के अंतिम दिन 9 अक्तूबर को गीत व गजल संध्या का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें अभी हाल ही में हांगकांग से लौटे सुशील चावला इस कार्यक्रम में संगीतकार होंगे। यह जानकारी समिति के सचिव संजय बंसल ने दी।

आंखों का मुफ्त आप्रेशन शिविर आज

'कौन देता है ये रातों को सदा रात गए'

नभाटा समाचार

कैथल, 6 नवम्बर। लायंस क्लब सैंट्रल कैथल द्वारा गत रात्रि स्थानीय कोयल कॉम्प्लैक्स में 'शामे गजल' का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय एवं अतिथि गायकों ने भाग लिया। करनाल के प्रो. एच.एल. मदान ने समारोह की शुरुआत करते हुए कहा:

जब किसी से गिला रखना,
अपने सामने आईना रखना।
यूँ उजालों से वास्ता रखना,
समां के पास ही हवा रखना।।

एक अन्य गायक बाबू भाई ने कई गजलें दिल को छू लेने वाली प्रस्तुत कीं अधिकांश को तालियों के जोश से खूब सराहा गया। उनकी सबसे ज्यादा पसन्द की गई गजल में अत्यन्त मार्मिक भावना का स्पर्श झलक रहा था

चौंक-चौंक उठती है, महलों की सदा रात गए।
कौन देता है ये, रातों को सदा रात गए।।

इस इलाके के जाने-माने गजल गायक सतीश मल्होत्रा ने अपनी सुंदर गजल प्रस्तुत की और कहा:

मैं खुद अपनी तलाश में हूं,
मेरा कोई रहनुमां नहीं है।
वो क्या दिखाएंगे राह मुझको,
जिन्हें खुद अपना पता नहीं है।।

अपने आपको गुलाम अली का शिष्य मानने वाले हिसार के सुशील चावला ने स्वयं को गायकाने में डुबोये रखा और उपस्थित जन समूह का मन अपनी सुंदर गजलों से मोह लिया। उन्होंने कहा:

मेरी सुबह महकदे में, मेरी शाम महकदे में।

इस अवसर पर अन्य गायकों कुमारी पूर्णिमा विजय शर्मा तथा कु. अनिता ने भी गजलें प्रस्तुत कीं। इससे पूर्व क्लब के अध्यक्ष एस.एल. मलिक ने आए मेहमानों का स्वागत किया और मंच का संचालन प्रो. भगवान दास निर्मोही ने संभाला।

नेत्र चिकित्सा शिविर: लायंस क्लब कैथल द्वारा 7 नवम्बर से 13 नवम्बर तक स्थानीय सामान्य अस्पताल में आंखों का मुफ्त शिविर आयोजित किया जाएगा। यह जानकारी क्लब के एक प्रवक्ता ने देते हुए बताया कि इस दौरान मरीजों को मुफ्त दवाइयां उपलब्ध करवाई जाएंगी।

'स्टेटस कार्ड' द्वारा सुखचैन काम्पलैक्स जालन्धर में आयोजित 'ग़ज़लों के साए में' कार्यक्रम में सुशील चावला ग़ज़लें प्रस्तुत करते हुए। (दाएं) उनका साथ देते हुए तबला वादक अशोक। (नीचे बाएं) उपस्थिति। (दाएं) भाग्यशाली अतिथि को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि रवि साहनी। साथ खड़े हैं 'स्टेटस कार्ड' के प्रबन्ध निदेशक संजय साहनी व महाप्रबन्धक सिमरन। (छाया : आर.एन. सिंह)

सर्द मौसम में अपनी ग़ज़लों से 'पागल दिल' में 'आवारगी' जगा गए सुशील चावला

जालन्धर, 2 अक्तूबर/तिवारी

'स्टेटस कार्ड' की प्रथम बैठक पर आयोजित 'ग़ज़लों के साये में' कार्यक्रम के अन्तर्गत ग़ज़ल गायक सुशील चावला ने अपनी प्रस्तुति से सभी को मुग्ध कर डाला।

स्थानीय सुखचैन काम्पलैक्स में करवाए गए इस सादे लेकिन प्रभावशाली कार्यक्रम में सुशील चावला ने पहले शेयर से ही उपस्थित श्रोताओं का दिल जीत लिया। उन्होंने सुनाया 'बड़े रसूख से दुनिया फ़रेब देती है, बड़े खलूस से हम ऐतबार करते हैं।' ग़ज़ल गायकी के उत्साद गुलाम अली का प्रभाव न सिर्फ उनके मन पर बल्कि आवाज़ में भी नज़र आया। उन्हीं द्वारा गाई कई ग़ज़लें भी इसने सुनाई। 'ये दिल, ये पागल दिल मेरा, क्यूं बुझ गया आवारगी' व 'हमको किसके ग़म ने मारा, यह कहानी फिर सही' की प्रस्तुति बढ़िया रही।

सर्द मौसम का स्वागत करते हुए सुशील चावला ने शेयर कहा—'दिल की चोटों ने कभी चैन से रहने न दिया, जब चली सर्द हवा मैंने तुझे याद किया।'

महफ़िल उस समय जवान हो गई जब उसने पंजाबी में श्रोताओं से रूबरू करते हुए कहा—'क्यों चन्न वेखां कोई लोड़ नहीं, सारे जग विच तेरे जेहा होर नहीं।' डा. कुअंर बेचैन द्वारा रचित एवं स्वयं सुशील चावला द्वारा स्वरबद्ध ग़ज़ल 'आज की शाम रात से पहले, जाम पर जाम, रात से पहले, आपको देखना संवर जाना, सिर्फ दो काम रात से पहले।' को भरपूर दाद मिली। अजनबी शहर में अपने प्रियतम के दर्शनों को तरसते बोल उन्होंने कुछ यूं कहे—'हम तेरे शहर में आए हैं मुसाफिर की तरह, सिर्फ इक बार मुलाकात का मौका दे दे।' आंखों के पैमाने से पीते हुए उन्होंने सुनाया—'मैं नज़र से पी रहा हूं, यह समां बदल न जाए न निगाह तुम झुकाना, कहीं रात ढल न जाए।'

श्रोताओं की फरमाईश पर उन्होंने एक चुलबुला गीत भी सुनाया—'चूल्हे आग न खड़े दे विच पानी, छड्डेयां दी जून बुरी।' इस गीत पर सभी ने तालियों के साथ सहयोग दिया। हुस्न के समन्दर को गहराई में डूबते हुए उनके कहे इस शेयर पर खूब तालियां बजी—'आपको देखकर देखता रह गया, और कहिए अब कहने को क्या रह गया।' विरह के कवि शिव कुमार बटालवी को स्मरण करते हुए उन्होंने उनकी ग़ज़ल सुनाई—'मैनूं तेरा शबाब ले बैठा, रंग गोरा गुलाब ले बैठा।'

इस अवसर पर 'स्टेटस कार्ड' के प्रबंध निदेशक श्री संजय साहनी ने नए सदस्यों एवं अतिथियों का स्वागत किया एवं गणमान्य व्यक्तियों को 'पुष्प गुच्छे' देकर सम्मानित किया। महाप्रबंधक कुमारी सिमरन ने 'स्टेटस कार्ड' के उद्देश्य, भविष्य के कार्यक्रम व सदस्यों को दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी दी। उपस्थिति में एक 'ड्रा' द्वारा भाग्यशाली विजेता का चयन किया गया। यह गौरव श्री कुलविन्द फुल्ल को प्राप्त हुआ। 'वैल ड्रैसड पर्सनैलिटी' के रूप में श्री अविनाश शर्मा का चयन हुआ। इन्हें उपहार देकर सम्मानित किया गया।

कुछ सुशील चावला के बारे में

ग़ज़ल गायकी में श्री सुशील चावला एक स्थापित नाम है। लुधियाना में जन्में 38 वर्षीय श्री चावला का अधिकांश समय हिसार में गुज़रा जबकि अब पिछले 3 वर्षों से वह जालन्धर में रह रहे हैं। उनकी आवाज़ में गुलाम अली के अंदाज़ झलकने के बारे में वह कहते हैं कि पिछले 28 वर्षों से वह उनकी ग़ज़लें ही सुनता आ रहा है। उनकी तस्वीर सामने रखकर एकलव्य की भांति उसने रियाज़ किया। सन् 1994 में उनकी भेंट गुलाम अली साहिब से हुई और उन्होंने अपने बारे में उन्हें बताया। उन्होंने इनके सिर पर आशीर्वाद भरा हाथ रखा। श्रीमती गुलाम अली ने भी मदद की। इसके बाद उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उसने बताया कि आज वह जिस मुकाम पर है, उससे कहीं आगे जाकर अपना अलग वजूद कायम करना चाहता है।

पंजाब आर्ट थियेटर (जालंधर) द्वारा आयोजित पंजाबी फिल्म मेला के एल. सहगल मेमोरियल हाल में शुरू हुआ। (ऊपर) कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए, (नीचे) सभा कला का मेला का शुभारम्भ करते अनिल चोपड़ा। इस अवसर पर मौजूद अमर आहूजा, पवन मल्होत्रा, गोविंद प्रभाकर, एस.एस. रंधावा। दूसरे दिन के समारोह में उपस्थित [illegible] गुरचरण सिंह [illegible], अमर आहूजा तथा संतोष आदि। कड़ी सर्दी में कार्यक्रम का आनंद लेते दर्शक। (छाया : [illegible])

'स्टेटस कार्ड' द्वारा जालंधर में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम 'एक शाम गजलों के नाम' के अवसर पर (बाएं) प्रसिद्ध गजल गायक सुशील चावला अपना कलाम प्रस्तुत करते हुए। (मध्य) [illegible] प्रतियोगिता के विजेता अनिल सहगल को विजयोपहार देते संस्था के प्रबंध निदेशक संजय साहनी तथा जी.एस. सिद्धू। (दाएं) [illegible] श्रीमती एवं श्री [illegible] सिंह [illegible] को सम्मानित करते हुए मुख्यातिथि डा. [illegible]। (छाया : [illegible])

धर्मार्थ अस्पताल शिलान्यास आज

जालन्धर, 20 दिसम्बर : आर्य समाज मंदिर,

जोनल कांफ्रेंस आज

जालंधर, 20 दिसम्बर (वोना): भारत के

Daily Ajit, Jalandhar ਜਲੰਧਰ : ਬੁੱਧਵਾਰ, 2 ਅਪ੍ਰੈਲ, 2003

'ਦੂਰੀਆਂ' ਲੈ ਕੇ ਹਾਜ਼ਰ ਹੈ ਸੁਸ਼ੀਲ ਚਾਵਲਾ

ਧਰਮਿੰਦਰ ਤਿਵਾੜੀ

ਸੰਗੀਤ ਦੇ ਤਿੱਖੇ ਸ਼ੋਰ 'ਚ ਵੀ ਗ਼ਜ਼ਲਾਂ ਦੀ ਕੈਸੇਟ ਕੱਢਣ ਦੀ ਜੁਅਰਤ ਕਰਨ ਵਾਲੇ ਸੁਸ਼ੀਲ ਚਾਵਲਾ ਨੇ ਕਦੇ ਵੀ ਨਹੀਂ ਸੋਚਿਆ ਸੀ ਕਿ ਉਸ ਦਾ ਸ਼ੌਕ ਹੀ ਕਦੇ ਉਸ ਦਾ ਕਿੱਤਾ ਬਣ ਜਾਏਗਾ। ਉਹ ਚੰਗਾ ਭਲਾ ਹਿਸਾਰ ਵਿਖੇ ਘੜੀਆਂ ਮੁਰੰਮਤ ਕਰਨ ਦਾ ਕੰਮ ਕਰਦਾ ਸੀ। ਮੁਰੰਮਤ ਵੇਲੇ ਹੱਥ 'ਚ ਘੜੀ ਫੜ ਕੇ ਉਸ ਦੇ ਬਰੀਕ ਪੁਰਜ਼ਿਆਂ 'ਤੇ ਉਸ ਦੀ ਪੈਨੀ ਅੱਖ ਘੁੰਮਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਅਤੇ ਮੂੰਹ 'ਚ ਉਹ ਕਿਸੇ ਗ਼ਜ਼ਲ ਦੀਆਂ ਲਾਈਨਾਂ ਗੁਨਗੁਨਾਉਂਦਾ ਰਹਿੰਦਾ। ਬਸ ਇਸੇ ਗੁਨਗੁਨਾਉਣ ਨੇ ਹੀ ਉਸ ਨੂੰ ਗਾਇਕ ਬਣਾ ਦਿੱਤਾ। ਘਰ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ ਗਾਉਣਾ ਪਸੰਦ ਨਹੀਂ ਸੀ, ਖਾਸ ਤੌਰ 'ਤੇ ਕਿੱਤੇ ਵਜੋਂ ਅਪਨਾਉਣ ਦੇ ਮਾਮਲੇ 'ਚ। ਨਾਰਾਜ਼ ਤੇ ਨਿਰਾਸ਼ ਹੋ ਕੇ ਉਹ ਹਿਸਾਰ ਛੱਡ ਕੇ ਆਪਣੇ ਬੀਵੀ ਬੱਚਿਆਂ ਨਾਲ ਜਲੰਧਰ ਆ ਗਿਆ ਤੇ ਇਥੇ ਛੋਟਾ-ਮੋਟਾ ਕੰਮ ਕਰਨ ਲੱਗ ਪਿਆ। ਇਥੇ ਇਕ ਦੋਸਤਾਨਾ ਸਮਾਗਮ 'ਚ ਉਸ ਨੇ ਜਦੋਂ ਕੁਝ ਗ਼ਜ਼ਲਾਂ ਸੁਣਾਈਆਂ ਅਤੇ ਅਗਲੇ ਦਿਨ ਉਸ ਨੂੰ ਅਖ਼ਬਾਰ ਦੀਆਂ ਸੁਰਖੀਆਂ 'ਚ ਆਪਣੀਆਂ ਤਾਰੀਫ਼ਾਂ ਲਿਖੀਆਂ ਮਿਲੀਆਂ ਤਾਂ

ਉਸ ਨੇ ਮੁੜ ਇਸੇ ਰਾਹ ਤੁਰਨ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਲਿਆ। ਦਿੱਲੀ ਜਾ ਕੇ ਉਸ ਨੇ ਗ਼ਜ਼ਲਾਂ ਗੁਲਾਮ ਅਲੀ ਦੇ ਪੈਰ ਫੜ ਲਏ. ਗ਼ਜ਼ਲਾਂ ਦੀਆਂ ਬਰੀਕੀਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਕੋਲੋਂ ਸਿੱਖ ਕੇ ਸੁਸ਼ੀਲ ਚਾਵਲਾ ਨੇ ਬਕਾਇਦਾ ਇਸ ਨੂੰ ਕਿੱਤੇ ਵਜੋਂ ਅਪਨਾਉਣ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਕਰ ਲਿਆ। ਦੂਰਦਰਸ਼ਨ 'ਤੇ ਵੀ ਉਹ ਹਾਜ਼ਰੀ ਲਗਵਾ ਚੁੱਕਾ ਹੈ ਅਤੇ ਪਿਛੇ ਜਿਹੇ ਉਹ ਇਕ ਮਹੀਨਾ ਵਿਦੇਸ਼ਾਂ 'ਚ ਵੀ ਪ੍ਰੋਗਰਾਮ ਦੇ ਕੇ ਆਇਆ ਹੈ। ਆਪਣੀ ਪਲੇਠੀ ਕੈਸੇਟ 'ਦੂਰੀਆਂ' ਲਈ ਉਹ ਇਸ ਦੇ ਗੀਤਕਾਰ ਅਰਸ਼ ਅੰਮ੍ਰਿਤਸਰੀ ਦਾ ਬਹੁਤ ਧੰਨਵਾਦੀ ਹੈ। ਇਸ ਖੇਤਰ 'ਚ ਉਹ ਸ੍ਰੀਮਤੀ ਅਮਰਜੀਤ ਕੌਰ (ਹਿਸਾਰ), ਪ੍ਰੋ: ਬੀ. ਐਸ. ਨਾਰੰਗ, ਸ੍ਰੀ ਰਾਜਿੰਦਰ ਰਾਣਾ, ਸ੍ਰੀ ਲਛਮਣ ਸਿੰਘ ਸੀਨ ਤੇ ਸ੍ਰੀ ਸੁਰਿੰਦਰ ਕੁਮਾਰ ਹੁਰਾਂ ਦਾ ਵੀ ਸ਼ੁਕਰਗੁਜ਼ਾਰ ਹੈ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਇਸ ਦੇ ਸਿਰ 'ਤੇ ਅਸ਼ੀਰਵਾਦ ਦਾ ਹੱਥ ਰੱਖਿਆ ਹੈ। ਉਸ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਸਾਫ਼-ਸੁਥਰੀਆਂ ਗ਼ਜ਼ਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਲੋਕਾਂ 'ਚ ਹਾਜ਼ਰੀ ਲਗਵਾਉਂਦਾ ਰਹੇਗਾ।

A ghazal singer with a difference

THE TRIBUNE, THURSDAY, FEBRUARY 7, 2002

Sushil Chawla of Jalandhar has the distinction of being the only "ghazal" singer of the northern region who exhibits his talent in hotels — not due to some compulsion, but for his passion for

small gatherings and his view that only a few people appreciate ghazals nowadays at a time pop is dominating the world of music.

Chawla, a product of DAV College here, is a disciple of Ghulam Ali, the "king of ghazals" and it was the famed ghazal "Chupke chupke raat din, aansoo bahana yaad hai", of the latter which inspired him to be a ghazal singer. "The day I had listened to this ghazal, I decided that I'll not pursue any other profession except music, particularly, ghazals. Hence I approached Ghulam Ali, who after a trial of four years, took him under hit tutelage in 1994. Since then I have been going to him during weekends to take lessons in ghazal singing", said Sushil, who has a number of awards and prizes to his credit and is currently working with the Ranbir Prime Hotel in Jalandhar. Earlier, he was a ghazal singer with a local hotel, Lilly Resorts.

Asked why he was not performing on the stage, he maintained that people hardly tend to be attentive and serious listeners during stage shows. "If you want to project your inner self by using ghazal as a medium, you need serious listeners and I think there is no better place than good hotels," said Chawla. The youthful singer has given a number of presentations in a Tokyo hotel and yearns to teach the art of ghazal singing to those with a yen for soulful music.

Lecturer honoured

A senior lecturer at Sangrur's Sant Longowal Institute of Engineering and Technology, Dr Kiranjit Singh Kahlon, was awarded the Best Engineering College Teacher Award 2001 for Punjab state at a function held in Orissa recently.

He was chosen by a selection committee constituted by the Indian Society for Technical Education and was awarded a cash prize, medallion and citation at the Kalinga Institute of Industrial Technology, Bhubaneshwar. Applications for the award were invited last October.

Specialising in radiation physics, Dr Kahlon has already

REGIONAL POTPOURRI

received the award of Senior Research Fellow by the CSIR, New Delhi, and is among the 2000 outstanding scientists of the 21st century, according to the International Biographical Centre, Cambridge.

Sorry state of crematorium

The condition of the cremation ground in Paonta Sahib deplorable. There is no proper shed in which people can take shelter, rubbish is strewn all over and whenever it rains heavily the people and their relatives

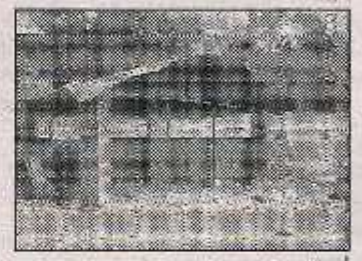

who come for funerals face many problems. There is only one tap where there is running water at certain hours of the day, there is no hand-pump. With the population rising in Paonta Sahib, the local administration, social organisations as well as the municipal committee are ignoring its upkeep. Even though people come from far-off places, there is hardly any facility.

Mr Karmveer Singh, Vice-President of the Rotary Club Chapter, said the club planned to make this crematorium like the one in Bangalore which would cremate bodies by electricity. This project will cost Rs 28 lakh.

Mr Naresh Khapra, Chairman of Municipal Committee, said it had set up a panel to improve the condition of the graveyard. He would collect donations from local people and seek a grant from the state government.

Contributed by Varinder Singh, Geetanjali Gayatri, Sarbjit Sakhowalia

पार्क की दुर्दशा के संबंध में हूडा प्रशासक को ज्ञापन

-ट्रिब्यून न्यूज सर्विस-

हिसार, 11 मार्च। नगर के अर्बन एस्टेट स्थित पार्क की दुर्दशा एवं इसके साथ लगती धक्का-बस्ती से होने वाली परेशानियों को लेकर आज भाजपा नेता के.एल. रिणवा के निवास पर एक आपातकालीन बैठक हुई, जिसमें हूडा प्रशासक को इस संबंध में ज्ञापन तैयार किया गया। अर्बन एस्टेट- II के पार्क को पार्क कहना अनुचित होगा। इसकी रेलिंग तक तोड़ी जा चुकी है और यह पार्क को बजाय एक मैदान में बदल चुका है। इसके आसपास लोग घरों का कूड़ा डालते रहते हैं और आवारा पशु भी अक्सर घूमते देखे जाते हैं।

दूसरी ओर धक्का-बस्ती के निवासियों के कारण भी परेशानियां बढ़ रही हैं। कल होली के अवसर पर धक्का-बस्ती के कुछ युवकों ने अर्बन एस्टेट के एक समूह से न केवल विवाद किया बल्कि बाद में रिणवा के निवास पर पथराव भी किया। इस संबंध में जिला पुलिस अधीक्षक को भी सूचित किया गया है और हूडा प्रशासक को दिए जाने वाले ज्ञापन में धक्का बस्ती और अर्बन एस्टेट को अलग-अलग करने के लिए एक दीवार का निर्माण करवाने का आग्रह किया गया है

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं कम्प्यूटर संबंधी पुस्तकों की मांग : नगर के सुशीला भवन में कैथल की अक्षरधाम समिति द्वारा लगाए गए पुस्तक मेले में संचालक सुरेश जांगिड़ उदय एवं रोशन वर्मा ने बताया कि आजकल पुस्तक मेलों में सर्वाधिक मांग ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं कम्प्यूटर संबंधी पुस्तकों की रहती है। इसके बाद मांग आती है साहित्यिक पुस्तकों की लेकिन इनके मूल्य आम आदमी की पहुंच से बाहर होने के कारण पाठक इन पुस्तकों को उलट-पलट कर देखता है और वहीं का वहीं रख जाता है।

गजल गायक सुशील चावला

गजल का सफर : हिसार के माडल टाउन निवासी सुशील चावला का गजल का सफर उन्हें हिसार से जालंधर तक ले गया है। हिसार में सुशील चावला के पिता की नागोरी गेट स्थित घड़ियों की दुकान है लेकिन वे गुलाम अली की गजलों के ऐसे दीवाने हुए कि गजल गायन के क्षेत्र में कदम रखने से पहले दिल्ली जाकर उन्हें अपना गुरु बना आए। गुलाम अली ने सुशील चावला आजकल वे जालंधर के निकट लिल्ली रिजोर्ट्स में शाम के समय अपने गायन के रंग बिखेरते हैं। गजल के इस सफर में श्री चावला ने बहुत कुछ खोया लेकिन अब उन्हें लगता है कि वे अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहे हैं। मुम्बई से भी उन्हें निमन्त्रण मिल रहे हैं।

नगर परिक्रमा : हिसार

पुष्प मेला : हिसार के टाउन पार्क में हाल ही में बड़ी धूमधाम से पुष्प मेला आयोजित किया गया। हिसार मण्डल की आयुक्त उमेश नन्दा ने इसका उद्घाटन किया तो जिलाधीश अनुराग रस्तोगी ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। हूडा प्रशासक दीप्ति उमाशंकर के प्रयास से बड़ी संख्या में लोगों ने पुष्प मेले में लगी प्रदर्शनी में अपने फूल-पौधे प्रदर्शित किए

गुजवि व विहिप में समझौते के प्रयास : गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय में गत दिवस संचित सीता-राम से सम्बन्धित एक लघु नाटिका के मंचन से शुरू हुए विवाद के चलते न केवल हिसार बल्कि उकलाना व आदमपुर में प्रदर्शन किए गए। विश्व हिन्दू परिषद् और इसके सहयोगी संगठनों ने गुजवि प्रशासन को 17 मार्च तक इस लघु नाटिका के मंचन को लेकर सार्वजनिक तौर पर माफी मांगने की चेतावनी दे रखी है। सूत्रों के अनुसार गुजवि प्रशासन व विहिप के बीच समझौते के प्रयास जारी हैं। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि 17 मार्च को गुजवि का पहला दीक्षान्त समारोह होने जा रहा है और उपराष्ट्रपति कृष्ण कान्त इस अवसर पर मुख्यातिथि होंगे।

गज़ल गायक–सुशील चावला

गज़ल अंतरमन को छूती है। शब्द थोड़े से, अर्थ बड़े से। पंक्तियां छोटी-सी, लेकिन भावों की व्यापकता। इसीलिए आज 'गज़ल' का प्रचलन हो गया है। श्रोता भी गज़ल सुनना चाहता है, संगीत की भारी-भरकम और कर्णभेदी धुनों और सुरों से परे। इसीलिए सुशील चावला ने गज़ल को अपनाया। अपनाया ही नहीं, अपनी रोज़ी-रोटी का साधन भी बनाया।

सुशील प्रोफैशनल गज़ल गायक है। पिछले सत्रह अट्ठारह साल से गज़ल गा रहा है। गज़ल गायकी अच्छी लगती है। श्री चावला किसी 'गैदरिंग' के सामने श्रोताओं की पसंद के अनुरूप गज़ल गाते हैं, तो समां बंध जाता है। इनके साथ तबले की संगत कुलदीप शर्मा करते हैं।

'गज़ल' को ही क्यों चुना ? इस सम्बन्ध में सुशील चावला कहते हैं, "जब मैं अभी 10-15 साल का ही था तो पिता जी एक रिकार्ड लेकर आए गुलाम अली साहिब की गज़लों का। उनकी गज़लें 'चुपके-चुपके रात दिन', 'हंगामा है क्यों बरपा' सुनी। मन को छू गईं। बस, तय हो गई एक राह–'चुपके-चुपके'। लगभग दस-पन्द्रह साल, गुलाम अली खां की तस्वीर सामने रख लेता, रियाज़ करता। 1994 में चंडीगढ़ में उनसे मिला। उनका आशीर्वाद लिया। कुछ गज़लों की मैंने स्वयं कम्पोजिंग की, मैंने उनसे पूछा, मेरी गज़ल गायकी किसी लैवल की है या नहीं ? सुन कर कहने लगे, 'दिल्ली आओ सुनूंगा, फिर गाइड करूंगा।' वह अक्सर दिल्ली आते रहते हैं। दिल्ली गया। उनकी बेगम शादिया जो भी उनके साथ थीं। मेरी गज़लें सुनीं। कहा, अच्छी गाई हैं। आशीर्वाद दिया। फिर तो मैं लगातार तीन चार साल दिल्ली जाता रहा। उन्हें गज़लें सुनाता, गाइडैंस लेता, आशीर्वाद भी। मुझे एक लाइन मिल गई। 1998 में जालन्धर के एक होटल में उनसे मुलाकात हुई।

उन्होंने कहा, 'अब तुम्हारे लिए दुआ करूंगा,' और उनकी दुआ का ही असर है कि मुझ में अब आत्मविश्वास है। अब मैं जालन्धर के एक रिसॉर्ट से अनुबंधित हूं। उनके ग्राहकों की गैदरिंग के सामने गाता हूं। लोग फरमायश से अपनी पसंदीदा गज़लें सुनते हैं :

भीगा-भीगा है मौसम चले आइए,
आज तन्हा हैं फिर हम, चले आइए,

—०—

अदा से चूम के फैंका गुलाब आंखों से,
दिया सवाल का उसने जवाब आंखों से,

—०—

मुझसे छिपाएं लाख मगर जानता हूं मैं,
क्या चाहती हैं उनकी नज़र जानता हूं मैं।

—०—

सुशील चावला में आत्मविश्वास है। गज़ल गायकी की सनक है। यही उसकी आजीविका का साधन भी है। इसलिए उसका कहना है कि अनूप जलोटा ने उनकी गज़लों की कैसेट निकालने का वायदा किया है।

—घनश्याम पंडित